गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

उच्च शिक्षा का माध्यम यदि हिंदी होगी, तो समाज के सभी वर्गों तक ज्ञान की पहुँच आसान होगी।

राजपाल

सत्र : 2024-25

अप्रैल, 2025

हिन्दी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 04अप्रैल 2025
वैशाख | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ राजेंद्र प्रसाद
शमशेर सिंह

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522, 9785775350

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय

बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर - एक परिचय
ज्योतिबा फुले - एक परिचय

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
स्मृति शेष
पुस्तक समीक्षा

संदेश

समाज की प्रगति और राष्ट्र की एकता का आधार *"सामाजिक समरसता"* है — यह कोरी उद्घोषणा नहीं, बल्कि जीवन-मूल्य है जिसे हमारे संस्थान की प्रत्येक इकाई को आत्मसात करना होगा। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने ऐसे ही समतामूलक समाज का सपना देखा था, जहाँ जाति, धर्म, लिंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी के साथ भेद न हो। हमारा महाविद्यालय केवल ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि *सामाजिक परिवर्तन की प्रयोगशाला* है। यहाँ हम कक्षा में, खेल के मैदान में, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में। भिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों के अनुभव सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करते हैं। पाठ्यक्रम और चर्चाओं के माध्यम से संवेदनशीलता विकसित करना हमारा दायित्व है। कोई भी छात्र या कर्मचारी स्वयं को उपेक्षित न महसूस करे। मतभेदों पर खुलकर बात करना, सुनना और समाधान ढूँढना। हर वर्ग, समुदाय और व्यक्ति के योगदान को सम्मान देना। "शिक्षा वह हथियार है जिससे आप दुनिया बदल सकते हैं।" — नेल्सन मंडेला के ये शब्द हमें याद दिलाते हैं कि *समरसता की नींव शिक्षण संस्थानों से ही पड़ती है।

आइए, हम सब मिलकर अपने कैंपस को ऐसा आदर्श स्थल बनाएँ जहाँ मानवीय गरिमा सर्वोपरि हो, जहाँ हर कदम पर समानता और भाईचारे की खुशबू महसूस हो। इस पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत विचार, शोध और अनुभव इस दिशा में एक सार्थक पहल हैं। यह पत्रिका हमारे सामूहिक प्रयासों का प्रतिबिंब है और इस दिशा में नई सोच को प्रेरित करेगी।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

सामाजिक समरसता: संवाद से सहअस्तित्व तक

समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं, बल्कि उनके विचारों, मूल्यों, विश्वासों और व्यवहारों का जीवंत तानाबाना है। इस तानेबाने की सबसे बुनियादी आवश्यकता है—समरसता, यानी विविधताओं के बीच सामंजस्य। आज जब समाज जाति, धर्म, भाषा, लिंग और वर्ग जैसे अनेक आधारों पर विभाजित दिखाई देता है, तब 'संवाद' ही वह सेतु है जो एक-दूसरे को जोड़ सकता है और हमें 'सह-अस्तित्व' की ओर ले जा सकता है।

संवाद का अर्थ केवल वाणी का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि विचारों का आदान-प्रदान है—संवेदना के धरातल पर। जब हम सुनते हैं, समझते हैं और प्रतिक्रिया नहीं, प्रत्युत्तर देते हैं, तभी संवाद की सार्थकता सिद्ध होती है। एक स्वस्थ समाज की नींव भी इस संवाद पर ही टिकी होती है, जहाँ विभिन्न समूह और व्यक्ति एक-दूसरे के अनुभवों को जानने और स्वीकारने को तैयार हों।

भारत जैसे बहुविविध देश में सह-अस्तित्व केवल आदर्श नहीं, आवश्यकता है। विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का समावेश तभी संभव है, जब प्रत्येक समूह को अपने अस्तित्व की गरिमा के साथ दूसरों के अस्तित्व को स्वीकार करने की उदारता हो। यह उदारता केवल सामाजिक नियमों से नहीं आती, यह आती है संवाद से, परस्पर संवेदना से।

शैक्षणिक संस्थान सामाजिक समरसता की प्रयोगशालाएँ हैं। यहाँ विद्यार्थियों को केवल पाठ्यक्रम नहीं, जीवनमूल्य सिखाने होते हैं। युवाओं में यदि समावेशी दृष्टिकोण विकसित हो, तो वे अपने कार्यक्षेत्रों में भेदभाव को मिटाकर समानता की संस्कृति को बढ़ावा देंगे।

समरसता कोई अचानक घटने वाली घटना नहीं, बल्कि सतत प्रक्रिया है। यह तब घटित होती है जब समाज के सभी घटक संवाद में भागीदार बनते हैं और एक-दूसरे के अस्तित्व को सहजता से स्वीकारते हैं। आज जब असहिष्णुता और ध्रुवीकरण की आहटें तेज़ हो रही हैं, तब 'संवाद से सह-अस्तित्व' की यह यात्रा और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

आइए, हम सब मिलकर संवाद के माध्यम से एक ऐसा समाज गढ़ें जिसमें मतभेद हों, लेकिन मनभेद न हों; विविधता हो, लेकिन विभाजन नहीं।

डॉ राजपाल

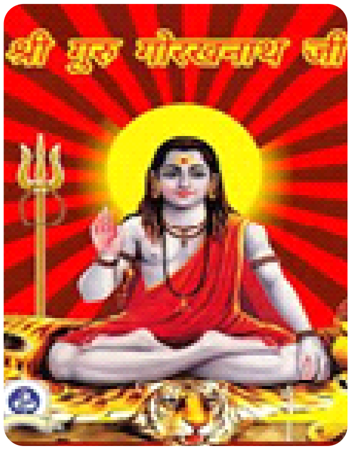

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गुरु गोरखनाथ जी का सामाजिक दर्शन अत्यंत विस्तृत और मानवतावादी था। उन्होंने न केवल आध्यात्मिक उत्थान पर बल दिया, बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों और भेदभाव को भी चुनौती दी। उनके सामाजिक दर्शन के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं:

1. सामाजिक समरसता और जाति-पाति का खंडन:

गुरु गोरखनाथ ने सामाजिक समरसता पर विशेष जोर दिया। उन्होंने जाति-पाति के भेद-भाव का पुरजोर विरोध किया और अपने पंथ के द्वार सभी जातियों, यहाँ तक कि अछूतों और अंत्यजों के लिए भी खोल दिए।

उन्होंने ब्राह्मणों को संबोधित करते हुए कहा कि यदि ईश्वर जाति भेद को मानता, तो जन्म से ही मनुष्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित क्यों नहीं कर देता। उनके अनुसार, सभी मनुष्यों के शरीर समान तत्वों से निर्मित हैं, उनमें एक ही खून और एक ही प्राणवायु है। इस प्रकार, उन्होंने छुआछूत और ऊँच-नीच की भावना को पूरी तरह से नकार दिया। उनके इस विचार ने सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त किया और अनेक महत्त्वपूर्ण योगी निम्न जातियों से भी निकले।

2. बाह्याडंबरों और रूढ़ियों का विरोध:

गोरखनाथ ने बाह्याचारों, कर्मकांडों और रूढ़ियों का खंडन किया। उन्होंने बाहरी पूजा-पाठ की अपेक्षा आंतरिक शुद्धि और आत्म-साधना पर बल दिया। उनके अनुसार, ईश्वर कहीं बाहर नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर ही विद्यमान है। उन्होंने कहा कि आंख मूंदने और कानों को बंद करने का कष्ट बेकार है, क्योंकि शुद्ध मन से किए गए सभी कार्य और व्यवहार ईश्वर की सेवा बन जाते हैं।

3. आचरण की शुद्धता और नैतिक मूल्यों पर जोर:

गोरखनाथ जी ने आचरण की शुद्धता, ईमानदारी और कथनी-करनी के मेल पर बहुत जोर दिया। उन्होंने योग को 'दया और दान का मूल' कहा। उनका चरित्र बहुमुखी था और उन्होंने सामान्य जनों को संयमित जीवन व्यतीत करने, मध्य मार्ग अपनाने और शीलाचरण का आदेश दिया।

4. लोक कल्याणकारी स्वरूप:

बुद्ध के बाद गोरखनाथ ही भारत में सच्चे लोकनायक हुए, जिनका प्रभाव राजमहल से लेकर झोपड़ियों तक पड़ा। उन्होंने जन कल्याण को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बनाया। उनके उपदेश व्यावहारिक थे और उन्होंने चतुर्दिक फैले हुए अनाचार को देखकर ब्रह्मचर्य प्रधान योग युक्त ज्ञान का व्यापक प्रचार-प्रसार किया।

5. योग और शारीरिक-मानसिक उन्नति:

गोरखनाथ का योगदर्शन सार्वभौम है। उन्होंने योग को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग बताया। उन्होंने काया सिद्धि का मार्ग प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार परम आत्मा की खोज में जीव को कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है, वह तो उसी के भीतर निहित है। उनका योग आज भी पूरे विश्व में प्रासंगिक है, जो लोगों को एक मजबूत और स्वस्थ शरीर और दिमाग विकसित करने में मदद करता है।

संक्षेप में, गुरु गोरखनाथ जी का सामाजिक दर्शन केवल आध्यात्मिक मुक्ति तक ही सीमित नहीं था, बल्कि वह एक ऐसे समतावादी और नैतिक समाज की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था, जहाँ जाति, धर्म, या किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना सभी मनुष्य सम्मान और सद्भाव से रह सकें।

गुरु गोरखनाथ के पद

अवधू अहुँठ परबत मंझार बेलड़ी मांड्यौ बिस्तार। बेली फूल बेली फल बेलि अछै मोत्याहल ॥ टेक ॥ सिष्टि उतपनीं बेली प्रकास, मूल न थी चढी अकास। उरध गढि कियौ बिस्तार, जांण नै जोसी करै बिचार ॥ अइसो भील पारधी हाथ नहीं, प्यंगुलो मुख दाँत न काहीं। हयो हयो मृघलौ धुणहींन तहीं, घंटा सुर तिहां नाद नाहीं ॥ भीलड़ै तिहाँ ताणियौ बांण, मनहीं मृघलौ बेधियौ प्रमाण। हयो हयो मृगलौ बेधियो बाण, धुण ही बाण न थी सर ताण ॥ भीलड़ी मातंगी राणी, मृघलौ आंणी ठांणी। चरण बिहूणों मृघलौ आंण्यौं, सीस सींग मुख जाइ न जाणी ॥ भणत गोरखनाथ मछिंद्र नां पूता, मात्रै मृग भया अवधूता । याहि हियाल जो कोई बूझै, ता जोगी को तृभुवन सूझै ॥

हे अवधू ! साढे तीन हाथ के शरीर (परबत) में माया (बेलड़ी) ने विस्तार किया। यह माया की बेल इतनी फली-फूली कि इस पर मुक्ताफल आ गए। इस माया के विकास में ही सृष्टि का विस्तार हुआ। इस माया की जड़ न थी, फिर भी यह आकाश (ब्रह्म स्थान) तक जा पहुँची। इसने ऊपर भी अपना गढ बना लिया। हे ज्ञानी ज्योतिषी ! तुझे इस बात का ज्ञान नहीं, इस पर विचार कर।
माया का शिकार करने वाली आत्मा (भील) ऐसा शिकारी है जिसके हाथ, पैर, मुँह और दाँत नहीं हैं, वह निराकार है। फिर भी वह मृग (मन) को मार देती है भले ही उसके पास धंनुष, हाँक लगाने वाली घंटी और बाँसुरी का सुर नहीं हैं। आत्मा रूपी शिकारी ने तीर साधा और निश्चय ही मन रूपी मृग को बींध दिया। धनुष से जो तीर सन्धान किया था, वह न धनुष था और न सन्धान किया गया तीर था। फिर ब्रह्मानन्द में मस्त आत्मा उस शिकार को अपने स्थान पर ले आई। उस शिकार के पैर, सिर, सींग और मुख न थे अर्थात् मन भी अरूप है। मच्छन्दर का पुत्र गोरख कहता है कि मृत मन अवधूत बन गया। जो इस कथा को अपने चित्त में समझता है, उसे त्रिभुवन (शरीर) का ज्ञान हो जाता है।

गोरख जी का मन्तव्य है कि माया के विस्तार से सृष्टि का विकास होता है। यह माया सूक्ष्म रूप में निराकार है। आत्मा और मन भी निराकार हैं। जो आत्मा ब्रह्मानुभूति प्राप्त करती हैं तो मन का सांसारिक रूप नहीं रहता और वह वीतरागी अवधू बन जाता है।

बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर

एक परिचय

बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर से एक बार एक विद्वान ने पूछा की; यदि सब कुछ जल रहा हो आपको सिर्फ एक किताब बचाने के लिए कहा जाए तो आप कौनसी एक कीमती बहुमुल्य किताब/ वस्तु बचाओगे ???
बाबा साहब बिना देरी किए एक ही जवाब था। "The Budhha and His Dhamma" भगवान बुद्ध और उनका धम्म।
मैंने यदि इस ग्रंथ को बचा लिया तो समझों मैंने सब कुछ बचा लिया। इसलिए हर जागरूक प्रबुद्ध जिंदा इंसान को खरीद कर उस ग्रन्थ को बार बार पढ़ना और पढ़ाना चाहिए फिर लगे की हाँ जीवन मे कुछ हलचल हुई तो उसको आत्मसात करना चाहिए।
1. महान समाजशास्त्री 2. महान अर्थशास्त्री 3 संविधान निर्माता 4. आधुनिक भारत के मसीहा 5. इतिहास के ज्ञाता और रचियता 6. मानवंशशास्त्र के ज्ञाता 7. तत्वज्ञानी (फिलॉसॉफर) 8. दलितों के और महिला अधिकारों के मसीहा 9. कानून के ज्ञाता (कानून के विशेषज्ञ) 10. मानवाधिकार के संरक्षक 11. महान लेखक 12 दबंग स्वतन्त्र पत्रकार 13. संशोधक 14. पाली साहित्य के महान अभ्यासक, अध्ययनकर्ता 15. बौद्ध साहित्य के अध्ययनकर्ता 16. भारत के पहले कानून मंत्री 17. मजदूरों के मसीहा 18. महान राजनीतिज्ञ 19. विज्ञानवादी सोच के समर्थक 20. संस्कृत और हिन्दू साहित्य के गहन अध्ययनकर्ता थे

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी, 9 भाषाएँ जानते थे -
1. मराठी (मातृभाषा) 2. हिन्दी 3. संस्कृत 4. गुजराती 5. अंग्रेज़ी 6. पारसी 7. जर्मन 8. फ्रेंच 9. पाली
उन्होंने पाली व्याकरण और शब्दकोष (डिक्शनरी) भी लिखी थी, जो महाराष्ट्र सरकार ने, "Dr.Babasaheb Ambedkar Writing and Speeches, Vol.16 "में प्रकाशित की हैं ।

#डॉआंबेडकर के संसद में पेश किए हुए विधेयक
1. महार वेतन बिल 2. हिन्दू कोड बिल 3. जनप्रतिनिधि बिल 4. खेती बिल 5. मंत्रियों का वेतन बिल 6. मजदूरों के लिए वेतन (सैलरी) बिल 7. रोजगार विनिमय सेवा 8. पेंशन बिल 9. भविष्य निर्वाह निधी (पी.एफ्.)

#डॉअंबेडकर के सत्याग्रह (आंदोलन)
1. महाड आंदोलन 20/3/1927 2. मोहाली (धुले) आंदोलन 12/2/1939 3. अंबादेवी मंदिर आंदोलन 26/7/1927 4. पुणे कौन्सिल आंदोलन 4/6/1946 5. पर्वती आंदोलन 22/9/1929 6. नागपूर आंदोलन 3/9/1946 7. कालाराम मंदिर आंदोलन 2/3/1930 8. लखनौ आंदोलन 2/3/1947 9. मुखेड का आंदोलन 23/9/1931

#डॉआंबेडकर द्वारा स्थापित सामाजिक संगठन
1. बहिष्कृत हितकारिणी सभा : 20 जुलाई 1924
2. समता सैनिक दल - 27 मार्च 1927
#राजनीतिक संगठन :
1. स्वतंत्र मजदूर पार्टी - 16 अगस्त 1936 2. शेड्युल्ड कास्ट फेडरेशन- 19 जुलाई 1942 3. रिपलिंकन पार्टी ऑफ इंडिया
#समाज सुधार के लिए धार्मिक संगठन :
1. भारतीय बौद्ध महासभा : 4 मई 1955

f#शैक्षणिक_ संगठन :

1. डिप्रेस क्लास एज्युकेशन सोसायटी : 14 जून 1928 2. पीपल्स एज्युकेशन सोसायटी : 8 जुलाई 1945 3. सिद्धार्थ कॉलेज, मुंबई- 20 जून 1946 4. मिलींद कॉलेज, औरंगाबाद- 1 जून 1950

#डॉ अंबेडकर द्वारा प्रकाशित : अखबार, पत्रिकाएँ

1. मूकनायक- 31 जनवरी 1920 2. बहिष्कृत भारत- 3 अप्रैल 1927 3. समता- 29 जून 1928 4 जनता- 24 नवंबर 1930 5. प्रबुद्ध भारत- 4 फरवरी 1956

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने अपने जीवन में विभिन्न विषयों पर 527 से ज्यादा भाषण दिए

#डॉअंबेडकर : प्राप्त राष्ट्रिय अंतरराष्ट्रीय

1. भारतरत्न 2.The Greatest Man in the World : Columbia University : 3.The Universe Maker : Oxford University :4.The Greatest Indian : CNN IBN & History Tv 5. Symbol. Of knowledge

#डॉअंबेडकर : निजी किताबें (उनके पास थी)

1. अंग्रेजी साहित्य- 1300 किताबें 2. राजनिती- 3,000 किताबें 3. युद्धशास्त्र- 300 किताबें 4. अर्थशास्त्र- 1100 किताबें 5. इतिहास- 2,600 किताबें 6. धर्म- 2000 किताबें 7. कानून- 5,000 किताबें 8. संस्कृत- 200 किताबें 9. मराठी- 800 किताबें 10. हिन्दी- 500 किताबें 11. तत्वज्ञान (फिलॉसाफी)- 600 किताबें 12. रिपोर्ट- 1,000 13. संदर्भ साहित्य (रेफरेंस बुक्स)- 400 किताबें 14. पत्र और भाषण- 600 15.जीवनी (बायोग्राफी)- 1200 16 एनसाक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटेनिका- 1 से 29 खंड 17. एनसाक्लोपिडिया ऑफ सोशल सायंस- 1 से 15 खंड 18. कैथॉलिक एनसाक्लोपिडिया- 1 से 12 खंड 19. एनसाक्लोपिडिया ऑफ एज्युकेशन 20 हिस्टोरियन्स् हिस्ट्री ऑफ दि वर्ल्ड- 1 से 25 खंड 21. दिल्ली में रखी गई किताबें-

बुद्ध धम्म, पालि साहित्य, मराठी साहित्य- 2000 किताबें 22. बाकी विषयों की 2305 किताबें

डॉ. बाबासाहब जब अमेरिका से भारत,लौट थे तब एक बोट दुर्घटना में

#डॉअंबेडकर : विशेषताएं

1. पानी के लिए आंदोलन करनेवाले विश्व के पहल महापुरुष 2. लंदन विश्वविद्यालय के पुरे लाईब्ररी के किताबों की छानबीन कर उसकी जानकारी रखनेवाले एकमात्र महामानव 3. लंदन विश्वविद्यालय के 200 छात्रों में, नंबर 1 का छात्र होने का सम्मान प्राप्त होनेवाले पहले भारतीय 4 विश्व के छह विद्वानों में से एक 5. विश्व में सबसे अधिक प्रतिमाएँ पुतले डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के हैं 6. लंदन विश्वविद्यालय मे डी.एस्.सी. यह उपाधी पानेवाले पहले और आखिरी भारतीय 7. लंदन विश्वविद्यालय का 8 साल का पाठ्यक्रम 3 सालों मे पूरा करनेवाले महामानव

▪ डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के वजह से ही भारत में "रिजर्व बैंक" की स्थापना हुईंउनकी,सैंकडो किताबें समंदर मे डूब गयीं।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने अपने डॉक्टर ऑफ सायंस के लिए ' दि प्रॉब्लेम ऑफ रूपी' यह शोध प्रबंध भी लिखा था।

योजना आयोग (नीति आयोग), एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज, पावर ग्रिड सिस्टम, वयस्क मताधिकार, मैटरनिटी बेनिफिट, चुनाव आयोग, न्यूनतम मजदूरी, न्यूनतम कार्य अवधि

#व्यक्तिगत_संघर्ष -

1. भारत के सबसे जादा पढे लिखे व्यक्ति 2. सबसे ज्यादा किताब लिखने वाले 3. सबसे तेज स्पीड से ज्यादा टाईप करने वाले 4. सबसे ज्यादा शब्द टाईप करने वाले 5. सबसे ज्यादा आंदोलन करें 6. महिला अधिकार के लिए, 'हिंदू कोड बिल',पास ना होने पर संसद में,मंत्रीपद का इस्तीफा देने वाले 7. दलित, पिछडो के हक़ को दिलाने वाले 8. हिन्दू धर्म के ग्रन्थ मनुस्मृति को,चोराहे पर जलाने वाले 9. जातिवाद को समाप्त करने के लिए, अंतरजातीय विवाह करने वाले 10. गरीब मज़लूमो के हको के लिए अपने,4 बच्चे पत्नी कुर्बान करने वाले 11. 2 लाख किताबो को पढ़कर,याद रखने वाले 12. भारत अनूठा सविधान निर्माता 13. पूना पैक्ट लिखा 14. मूक नायक पत्रिका निकाली 15. बहिष्कृत समाचार पत्र निकाला 16. सबसे तेज लिखने वाले 17. दोनों हाथो से लिखने वाले 18. ग़ांधी जी को जीवन दान देने वाले 19. सबसे काबिल बैरिस्टर

f 20. मुम्बई के सेठ के बेटे को फर्जी, मुक़दमे से बरी कराने वाले 21. योग ध्यान करने वाले 22. सबसे ईमानदार एवं प्रामाणिक 23. 18 से 20 घंटे पढ़ने वाले 24. सरदार पटेल को obc का मतलब,समझने वाले 25. स्कूल के बहार बैठकर और अपमान सहकर उच्च शिक्षा पाने वाले 25.समाज के लिए अपनी पत्नी रमाबाई को खोने वाले।

#Dr.AMBEDKAR

* -: 1891-1956 :-

B.A., M.A., M.Sc., D.Sc., Ph.D., L.L.D., D.Litt., Barrister-at-La w. B.A. (Bombay University) Bachelor of Arts, MA.(Columbia university) Master Of Arts, M.Sc.(London School of Economics) Master Of Science, Ph.D. (Columbia University) Doctor of philosophy , D.Sc.(London School of Economics) Doctor of Science , L.L.D.(Columbia University) *Doctor of Laws ,*ग D.Litt.(Osmania University) Doctor of Literature, Barrister-at-Law (Gray's Inn,*London) law qualification for a lawyer in royal court of England. Elementary Education, 1902 Satara, Maharashtra Matriculation, 1907, Elphinstone High School, Bombay Persian etc., Inter 1909, Elphinston e College, Bombay Persian and English B.A, 1912 Jan, Elphinstone College, Bombay, University of Bombay, Economics & Political Science M.A 2-6-1915 Faculty of Political Science, Columbia University, New York, Main-Economics Ancillaries-Soc iology, History Philosophy, Anthropology, Politics Ph.D 1917 Faculty of Political Science, Columbia University, New York, 'The National Divident of India - A Historical and Analytical Study' M.Sc 1921 June London School of Economics, London

'Provincial Decentralizatio n of Imperial Finance in British India'

Barrister-at- Law 30-9-1920

Gray's Inn, London Law

D.Sc 1923 Nov. London School of Economics, London

'The Problem of the Rupee -

Its origin and its solution' was

accepted for the degree of

D.Sc. (Economics).

L.L.D (Honoris Causa) 5-6-1952

Columbia University, New York For

HIS achievements,

Leadership and authoring the constitution of India

D.Litt (Honoris Causa)

12-1-1953 Osmania University, Hyderabad For HIS achievements,

Leadership and writing the constitution of India !

The Budhha and His Dhamma

कम्प्यूटर विषयक

Neural Network
तंत्रिका जाल / न्यूरल नेटवर्क
Deep Learning
गहन शिक्षण
Algorithm
कलन विधि / सूत्रपद्धति
Data Set
आँकड़ा समूह
Training Data
प्रशिक्षण डेटा
Voice Assistant
वाणी सहायक
Chatbot
वार्तालाप सहायक / चैटबॉट
Speech Recognition
वाक् पहचान / भाषण मान्यता
Text-to-Speech (TTS)
पाठ से वाणी प्रणाली
Speech-to-Text (STT)
वाणी से पाठ प्रणाली
Optical Character Recognition (OCR)
प्रकाशीय वर्ण पहचान
Semantic Analysis
अर्थविश्लेषण
Language Model
भाषा मॉडल
Tokenization
खंडन / टोकन विभाजन
Syntax
वाक्य विन्यास
Translation
अनुवाद
Sentiment Analysis
भावना विश्लेषण
Fuzzy Matching
अस्पष्ट मिलान
Big Data
विशाल डेटा
Cloud Computing
मेघ संगणना

ज्योतिबा फुले
एक परिचय

23 सितम्बर 1908 -
24 अप्रैल 1974

ज्योतिबा फुले

जोतिराव गोविंदराव फुले एक भारतीय समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। इन्हें महात्मा फुले एवं ''जोतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है। सितम्बर 1873 में इन्होने महाराष्ट्र में सत्य शोधक समाज नामक संस्था का गठन किया।

जन्म की तारीख और समय: 11 अप्रैल 1827, कत्गुन
मृत्यु की जगह और तारीख: 28 नवंबर 1890, पुणे
पत्नी: सावित्रीबाई फुले (विवा. 1840–1890)
इनसे प्रभावित: गौतम बुद्ध, अब्राहम लिंकन,गुरु कबीर, मुहम्मद साहब, तुकाराम आदि।

ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के कटगुण में हुआ था। उनका पूरा नाम ज्योतिराव गोविंदराव गोन्हे, ज्योतिराव गोविंदराव फुले था। उनके पिता का नाम गोविंदराव तथा उनकी माता का नाम चिमणा बाई था। जब वे 1 साल के हुए तो उनकी माता का देहांत हो गया। इसके बाद उनका पालन – पोषण सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। उनका विवाह 1840 में सावित्री बाई फुले से हुया था। ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई फुले के कोई संतान नहीं थी इसलिए उन्होंने एक विधवा के बच्चे को गोद लिया था | यह बच्चा बड़ा होकर एक Doctor बना और इसने भी अपने माता पिता के समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाया।

जय भीम।
नमो बुद्धाय।
जय फूले दंपति
जय समण संस्कृति

1. ARJU - 01-04-2002
2. NEHA - 11-04-2002
3. MONIKA - 10-04-2001
4. KALPNA - 04-04-2002
5. POOJA DEVI- 08-04-2003
6. RAJNI BALA - 26-04-2001
7. REENA - 26-04-2002
8. PRIYANKA - 02-04-2001
9. KIRAN RANOLIA - 06-04-2003

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. चौरासी सिद्धों में सबसे ऊँचा स्थान किस सिद्ध का माना जाता है? - लुइपा
2. सिद्ध कवि लुइपा के गुरु कौन थे? -शबरपा
3. किस सिद्ध-कवि की रचनाओं में रहस्य-भावना की प्रधानता है? - लुइपा
4. सिद्ध साहित्य का विकास कहाँ हुआ? - पूर्वी भारत में (बिहार, बंगाला, उड़ीसा, असम)
5. 'नाद न बिंदु न रवि न शशि मण्डल' - पंक्ति किसकी है? -सरहपा
6. 'पंडिअ सअल सत्त बक्खाणइ। देहहि रुद्ध बसंत न जाणइ अमणागमण ण तेन विखंडिअ। तोवि णिलज्जइ भणइ हउँ। पंडिअ। - पंक्तियाँ किसकी हैं? - सरहपा
7. काआ तरुवर पंच विड़ाल' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - लुइपा
8. 'सहजे थिर करि वारुणि साथ' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - विरूपा
9. रूक्क ण किज्जइ मंत्र ण तंत' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - कण्हपा
10. नगर वाहिरे डोंबी तोहरि कुड़िया छइ' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - कण्हपा
11. 'गंगा जउँना माझे रे बहइ नाई' - पंक्तियाँ किसकी हैं? डोम्भिपा
12. हाउनिवासी खमण भतारे, मोहारे विगोआकहण न जाइ।' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - कुक्कुरिया
13. 'ससुरी निंद गेल, बहुड़ी जाग' पंक्तियाँ किसकी हैं? - कुक्कुरिया
14. सिद्धों का विकास किससे हुआ? बौद्ध धर्म के ब्रजयान शाखा से
15. महाराष्ट्र के संत ज्ञानदेव के अनुसार गोरखनाथ की शिष्य परंपरा है- आदिनाथ, मत्स्येंद्रनाथ, गोरखनाथ, गैंगीनाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर।
16. नाथपंथियों का हठयोग साधना का विकास किसकी प्रतिक्रिया में हुआ? - सिद्धों की वाममार्गी-भोगप्रधान योग साधना की प्रतिक्रिया में

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
असाधु	दुष्ट
अशोच	बिना सोच के
अशौच	अशुद्ध
अनित्य	नश्वर
अनृत	असत्य
अयुक्त	अनुचित
आयुक्त	कमिश्नर
अयोग	योग का अभाव
आयोग	कमीशन

गुरु गोरखनाथ अकेले ऐसे संत, जिनका हर मत संप्रदाय और धर्म में सर्वोच्च स्थानः योगी डॉ. अनूप नाथ

डा. योगी अनूप नाथ को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्राचार्य डॉ. विवेक कुमार सैनी व अन्य।

हिसार, 19 अप्रैल (ब्यूरो): गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय में गुरु गोरखनाथ के विषय में एक व्याख्यान आयोजित किया गया। नाथ संप्रदाय को एक माला में पिरोने और भारत की सनातन परंपरा योग की अलख घर-घर जलाने का काम गुरु गोरखनाथ ने किया। इतिहास में इससे पूर्व यह काम कोई नहीं कर पाया। गुरु गोरखनाथ एक एक ऐसे संत हुए है, जिन्हें हर मत, संप्रदाय और धर्म में पूजा जाता है। ऐसे संत के नाम पर हिसार के राजकीय महाविद्यालय का नाम रखना सर्व समाज के लिए गर्व का विषय है।

यह बात आज गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय में गुरु गोरखनाथ एक महान योगी, संत और नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक के जीवन दर्शन पर आयोजित व्याख्यान को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता प्रमुख शिक्षाविद्ध डॉ. योगी अनूप नाथ ने कही। हिंदी विभाग की ओर से आयोजित इस व्याख्यान की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ.विवेक कुमार सैनी ने की।

मुख्य वक्ता ने कहा कि गुरु गोरखनाथ, जिन्हें गोरक्षनाथ के नाम से भी जाना जाता है, एक हिंदू योगी, महासिद्ध और संत थे जो भारत में नाथ संप्रदाय के संस्थापक थे। उन्होंने योग, आध्यात्मिक अनुशासन और आत्म मुक्ति के नैतिक जीवन का समर्थन किया। इसके साथ योग और साधना, अध्यात्म और आत्म.मुक्ति, सामाजिक समरसता, ब्रह्मचर्य और वैराग्य को जीवन में धारण किया।

इससे पूर्व मुख्य वक्ता के महाविद्यालय पहुंचने पर प्राचार्य, कॉलेज काउंसिल, एन.एस.एस. प्रभारी और हिंदी विभाग ने स्वागत किया। हिंदी विभाग के डॉ.राजपाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत संबोधन किया। व्याख्यान उपरांत विभागाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने आए हुए अतिथियों का धन्यवाद किया। इस मौके पर रामेहर योगी, डा. सुरेश, डॉ. सतीश वर्मा, सुरेंद्र बाजिया, सुखबीर दुहन, मामन सिंह, राजेन्द्र सेवदा, मनोज कुमार, दीपिका, मीना, वंदना गोयल आदि उपस्थित थे।

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Daily Allowance = दैनिक भत्ता

Daily routine = दैनिक कार्य

Damages = Data = क्षति/हरज़ाना आँकड़े/आधार सामग्री

Days of grace = रियायती दिन

Dearness Allowance = महँगाई भत्ता

Death-cum-retirement Gratuity = मृत्यु तथा निवृत्ति उपादान

Debar = रोकना/वर्जन करना

Debenture = ऋण पत्र

Debit = नामे/नामे डालना

Decorum = शिष्टता/शालीनता

Decrease = छंटनी/कमी

Deed = विलेख

Deem fit = उचित समझना

Disband = तोड़ देना/भंग करना

Disbursement = संवितरण

Discard = अमान्य करना/अलग करना

Discharge = निर्वहन/पालन/उन्मोचन

Discharged = सेवा मुक्त

Disclaim = दावा छोड़ना/स्वत्व छोड़ना

Discount = बट्टा

Discrepancy = विसंगति

Discretion = विवेक

Dismiss = बर्खास्त करना

Disorder = अव्यवस्था

Disposal = निष्पादन

Disparity = असमानता

Displaced = विस्थापित

स्मृति शेष

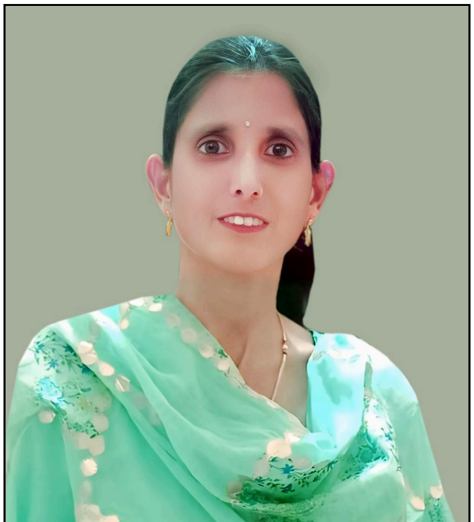

Late- Smt. Bimla Devi
20-08-1981 To 22-04-2025

स्मृति शेष

आँखों में नमी, हृदय में हाहाकार,
क्या पता था, जीवन होगा इतना लाचार।
तुम थीं साथ, तो हर राह आसान थी,
अब सूनी दुनिया, हर खुशी वीरान है ।
एक पल में सब कुछ बदल गया,
बिना बताए तुम दूर चली गईं।
विश्वास नहीं होता, तुम नहीं हो,
कैसे जिऊगा, ये जीवन अब नहीं।
याद आते हैं वो पल, वो हँसी, वो बातें,
अब सिर्फ़ रह गई हैं सूनी रातें।
हर कोने में तुम्हारी ही छवि है,
कैसे भूलूँ तुम्हें, ये कैसा मर्म है?
काश! एक बार और देख पाता तुम्हें,
एक बार और छू पाता तुम्हें।
पर नियति को कुछ और ही मंज़ूर था,
मेरा प्यार, मेरा साथ, सब अधूरा था।
अब बस यादें हैं और आँसुओं का संगम,
कैसे सहूँ ये वियोग, ये कैसा है ग़म?
तुम जहाँ भी हो, शांति से रहना,
मेरी आत्मा तुम्हें हमेशा याद करेगी, ओ मेरी
....

अमर निधि

तुम्हारे जाने के बाद
मैंने शब्दों से नहीं,
साँसों से लिखी है यह कविता
हर पंक्ति में तुम्हारी धड़कन,
हर अक्षर में तुम्हारी मुस्कान,
हर विराम पर तुम्हारे हाथ की गर्मी।
यह वही स्याही है
जो तुम्हारे आँचल से छनकर
मेरे मन के कागज़ पर उतरी थी,
आज वही
हिंदी साहित्य के महाकाव्य में
अमृत बनकर बह रही है।
मेरे शब्द नहीं
तुम्हारे प्रेम के प्रतिबिंब हैं
जैसे गंगा में हिमालय का स्पर्श,
जैसे सूर्यकांत में सरोज की याद,
जैसे महादेवी के एकांत में
निःशब्द आँसुओं का गीत।
इस कविता को पढ़ोगे तो
तुम नहीं, तुम्हारा आत्मा नाचेगी
हर पृष्ठ पर,
तुम्हारी छवि उभरेगी
हर शब्द के अंतराल में,
तुम्हारी सुगंध बसेगी
हर अनुच्छेद की संधि में।
राज नहीं जानता कविता कैसे लिखी
जाती है,
पर जानता हूँ प्रेम कैसे लिखा जाता है ,
वही लिख रहा हूँ...
तुम्हारी यादों की यह अक्षय निधि
अब तुमसे बड़ी हो गई है,
साहित्य की वेदी पर
अमर हो गई है।

“तुम्हारे बाद का साहित्य"

मैं कोई निराला नहीं,
जो विद्रोह के गीत लिख सकूँ,
न महादेवी हूँ,
जो एकांत का अद्भुत शिल्प रच
दूँ।
मैं तो बस तुम्हारा राज हूँ -
जिसने तुम्हारी हँसी में
जीवन का पाठ पढ़ा था,
और अब तुम्हारी यादों में
अपना अक्षर-ज्ञान लिख रहा हूँ।
मेरा साहित्य वह नहीं
जो पुस्तकों में सजेगा,
बल्कि वह है जो
रसोई के उस कोने में लिखा है,
जहाँ तुम्हारा चाय का कप
अब भी गर्माहट ढूँढ़ता है।
मेरी भावना वह आलोक है
जो तुम्हारी तुलसी को सींचते हुए
मेरी हथेलियों से टपकता है,
वह संगीत है जो
तुम्हारे साड़ियों के सलवटों में
अब भी सुनाई देता है।
मैं रच रहा हूँ एक ऐसा अनुभव
जिसकी हर पंक्ति में
तुम्हारे हाथों का स्पर्श है,
हर अध्याय में
तुम्हारी साँसों की गंध,
हर पृष्ठ पर
तुम्हारे चले जाने का
खालीपन नहीं,
बल्कि तुम्हारे होने का
साक्षात्कार है।
यह साहित्य नहीं,
प्रेम का प्रतिबिंब है
जो दर्पण की तरह
हर उस चेहरे में दिखेगा,
जो किसी को खोकर
फिर भी जीना सीख रहा है।

शब्दों का मर्म

मैंने देखा है -
निराला के आँसुओं में जलती हुंई मशाल,
जो "सरोज स्मृति" के अंतिम छंद तक
अपनी ही ज्वाला से लड़ती रही;
और महादेवी की लेखनी में
वह एकांत जो "नीर भरी दु:ख की बदली" बन
हर पाठक के आकाश में बरसता है।
मैंने पढ़ा है -
बच्चन के "निशा-निमंत्रण" में छिपा वह रुदन,
जहाँ श्यामा की यादों के पत्र
हर पंक्ति में धड़कते हैं;
और धर्मवीर भारती के गद्य में
कांता का वह अंतिम हँसना
जो "गुनाहों का देवता" बन गया।
मैंने सुना है -
केदारनाथ सिंह के "उत्तर कबीर" में
चंद्रकांता का वह सवाल:
"क्या मौत भी कोई जवाब हो सकती है?"
जिसका उत्तर
हर विधवा सुबह की चुप्पी में ढूँढ़ती है।
पर मेरा दु:ख?
वह तो बस इतना भर है -
एक साधारण पति का
असाधारण प्रेम,
जो न तो छंद बन सकता,
न गद्य का गर्व;
बस यूँ ही फैला पड़ा है
हमारे बिस्तर के उस पार,
तुम्हारे तकिये पर,
जहाँ तुम्हारे सिर का गड्ढा
अब भी मौजूद है
एक अधूरे प्रेम-पत्र की तरह।
मेरी यह कविता
न हिंदी की निधि है,
न साहित्य का भंडार;
बस वह स्याही है
जो तुम्हारी याद के कागज़ पर
अनायास ही फैल गई -
जैसे रात के आँसू
तकिये पर अपनी भाषा लिख जाते हैं।

"यादों का व्याकरण"

मैं कवि नहीं,
केवल शब्दों का रसायनिक था -
तब तक...
जब तक तुम्हारी याद ने
मुझे भाषा का नया पाठ नहीं पढ़ाया।

अब हर दुख को मैं
एक नए वाक्य में बाँधता हूँ -
जहाँ विराम चिह्न
आँसू नहीं,
साँसों के पुल बन जाते हैं।

तुम्हारे खालीपन की व्याकरण में
मैंने सीखा है -
हृदय के कोष में
प्रेम ही एकमात्र
अक्षय क्रिया है,
जिसका कोई भूतकाल नहीं।

आज जब लोग मुझसे पूछते हैं
"कैसे जीना चाहिए?"
तो मैं बताता हूँ -
दुख को मिटाने नहीं,
बल्कि उसे
नए वाक्य रचने दो...
जैसे समुद्र लहरों को
अपना संगीत बनाता है।

मेरी यह भावना
किसी के जाने के लिए नहीं,
बल्कि उन जीवित आँखों के लिए है
जो अंधेरे में भी
शब्दों का प्रकाश ढूँढ़ती हैं -
क्योंकि प्रेम की भाषा
कभी मरती नहीं...
बस रूप बदलती है।

शोक की छाया

तुम चली गई, अचानक ही,
जैसे दीपक बुझ जाए रातों-रात।
मेरी साँसों में अब रह गया है,
तुम्हारे बिना एक सन्नाट।

तुम्हारी यादों के पन्ने अब,
दर्द से भरे, गहरे काले।
हर चीज़ में तेरा अभाव सा,
जैसे धूप में ठंडी छाया पाले।

तुम्हारी मुस्कान थी जो मेरे,
हर दुख का हल होती थी।
अब वो खालीपन साथ लेकर,
कैसे जीऊँ, ये मैं नहीं जानता थी।

दिन ढलते हैं, रातें आती हैं,
पर तेरी कमी नहीं जाती।
मन के कोने-कोने में बस तू,
और यह विछोह सताती।

कभी सोचा न था अकेले,
इस जीवन को जी पाऊँगा।
तुम्हारे बिना हर पल अब,
बस एक सवाल बन जाऊँगा।

पुस्तक समीक्षा

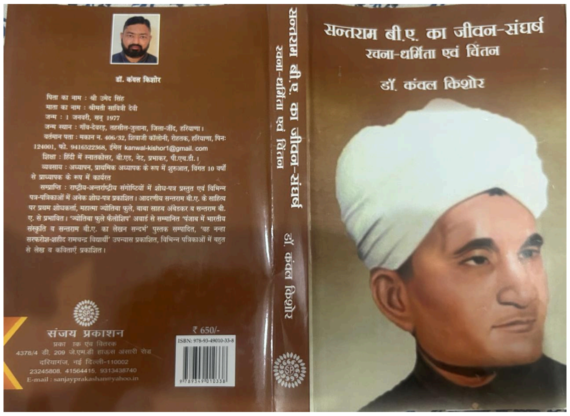

लेखक: डॉ. कंवल किशोर
पुस्तक: “सन्तराम बी.ए. का जीवन-संघर्ष, रचना-धार्मिता एवं चिंतन”
📖 मूल्य: ₹650.00
संजय प्रकाशन
नई दिल्ली (भारत)

डॉ. कंवल किशोर द्वारा लिखित यह पुस्तक महामना सन्तराम बी.ए. के बहुआयामी व्यक्तित्व और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान को गहन शोध के साथ प्रस्तुत करती है। सन्तराम बी.ए. एक ऐसी विलक्षण शख्सियत थे, जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, जातिभेद के विरोध और स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। पुस्तक उनके जीवन के संघर्षों, साहित्यिक रचनाधर्मिता और प्रगतिशील चिंतन को विस्तार से दर्शाती है, जो आज के सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में भी प्रासंगिक है। लेखक ने सन्तराम बी.ए. के जीवन और कार्यों को तथ्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। पुस्तक में उनके द्वारा स्थापित "जात पाँत तोड़क मंडल" और बाबा साहब अंबेडकर से जुड़े ऐतिहासिक प्रसंगों का विवरण शोध की गहराई को दर्शाता है। हालाँकि, कुछ अनछुए पहलू (जैसे उनके निजी जीवन के कुछ पहलू या विशिष्ट राजनीतिक मतभेद) पर और अधिक विस्तार दिया जा सकता था। पुस्तक की भाषा सरल, प्रवाहमय और विचारोत्तेजक है। डॉ. कंवल किशोर ने सन्तराम बी.ए. के जीवन को एक कथा-नायक की तरह प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक उनके संघर्षों से जुड़ाव महसूस करते हैं। हालाँकि, कुछ स्थानों पर घटनाओं का क्रम थोड़ा असंगत लगता है, जिसे बेहतर संयोजित किया जा सकता था।

सन्तराम बी.ए. का जीवन भारतीय समाज के उस दौर का प्रतिनिधित्व करता है, जब जातिगत भेदभाव और भाषाई संघर्ष चरम पर थे। पुस्तक उनके हिंदी-प्रेम और सामाजिक एकता के प्रयासों को रेखांकित करती है, जो आज भी सामाजिक न्याय और भाषाई अस्मिता के लिए प्रेरणादायक है। विशेष रूप से "जात पाँत तोड़क मंडल" के माध्यम से किया गया कार्य आज भी दलित-बहुजन आंदोलनों के लिए मार्गदर्शक है। यह पुस्तक इतिहास, समाजशास्त्र और हिंदी साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए उपयोगी है। शोधार्थियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकती है, लेकिन सामान्य पाठकों के लिए कुछ अंश थोड़े गहन और विस्तारपूर्ण हो सकते हैं। सन्तराम बी.ए. का जीवन उस कालखंड का प्रतिनिधित्व करता है जब भारत ब्रिटिश शासन, जातिगत विषमता और भाषाई पुनर्जागरण के बीच संघर्षरत था। डॉ. कंवल किशोर की यह पुस्तक न केवल एक व्यक्ति की जीवनी है, बल्कि *20वीं सदी के उत्तरार्ध के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास* का एक दस्तावेज भी है। सन्तराम बी.ए. का जीवन स्वतंत्रता आंदोलन, हिंदी भाषा के उत्थान और जाति-विरोधी आंदोलनों से गहराई से जुड़ा था, जिसे इस पुस्तक में विस्तार से दर्शाया गया है। सन्तराम बी.ए. का सबसे बड़ा योगदान *जाति उन्मूलन आंदोलन* था। उन्होंने *1922 में 'जात पाँत तोड़क मंडल'* की स्थापना की, जिसने बाद में *डॉ. भीमराव अंबेडकर* जैसे विचारकों को प्रभावित किया। पुस्तक में इस संगठन के माध्यम से चलाए गए *अंतर्जातीय विवाह, सामूहिक भोज और शैक्षणिक समानता* के प्रयासों का विस्तृत वर्णन है। विशेष रूप से, *1936 के 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' (जाति का उच्छेद) वक्तव्य* के साथ उनके संबंध को रेखांकित किया गया है, जो एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी। सन्तराम बी.ए. *हिंदी के प्रबल पक्षधर* थे, जबकि उनका जन्म पंजाबी भाषी क्षेत्र में हुआ था। उन्होंने *लाहौर में हिंदी प्रचार सभा* की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और *100 से अधिक पुस्तकों का लेखन, अनुवाद व संपादन* किया। पुस्तक में उनके *हिंदी-उर्दू विवाद* और *भाषाई राष्ट्रवाद* पर विचारों को दर्ज किया गया है, जो आज भी भाषा और राष्ट्र की बहसों में प्रासंगिक है।

डॉ. कंवल किशोर की यह पुस्तक सन्तराम बी.ए. के व्यक्तित्व और कृतित्व को समग्रता से समझने का एक सार्थक प्रयास है। यह न केवल एक जीवनी है, बल्कि एक ऐसे युग का दस्तावेज भी है, जहाँ भाषा, जाति और राष्ट्र निर्माण के प्रश्न गहरे जुड़े हुए थे। यह पुस्तक समाज सुधारकों, हिंदी प्रेमियों और इतिहास के छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ साबित होगी।

डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार